

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे राल्मीकीये आदिकार्ये सुन्दरकाण्डे

॥ सप्तमः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ सप्तमः सर्गः ॥

रारणभरनस्य पुष्पकरिमानस्य च रर्णनम्

स रेश्मजालं बलरान् ददर्श
र्यासक्तुरैदूर्यसुरर्णजालम्।
यथा महंप्राबृषि मेघजालं
रिदुयुपिनङ्गं सरिहङ्गजालम् ॥ 5.7.1 ॥

निरेशनानां रिरिधाश्च शालाः
प्रधानशङ्खायुधचापशालाः।
मनोहराश्चापि पुनरिशांला
ददर्श रेश्माद्रिषु चन्द्रशालाः ॥ 5.7.2 ॥

गृहाणि नानारसुराजितानि
देरासुरैश्चापि सुपूजितानि।
सरैश्च दोषैः परिरर्जितानि
कपिर्ददर्श स्वबलार्जितानि ॥ 5.7.3 ॥

तानि प्रयत्नाभिसमाहितानि
मयेन साम्नादिर निर्मितानि।
महीतले सर्रगुणोत्तराणि
ददर्श लङ्काधिपतेर्गृहाणि ॥ 5.7.4 ॥

ततो ददर्शोच्छ्रितमेघरूपं
मनोहरं काष्णनचारुरूपम्।

রক্ষোহধিপস্যাঅবলানুরূপং
গৃহোত্তমং হ্যপ্রতিরূপরূপম্ ॥ 5.7.5 ॥

মহীতলে স্বর্গমির প্রকীর্ণং
শ্রিয়া জ্বরলন্তং বহুরত্নকীর্ণম্।
নানাতরুণাং কুসুমারকীর্ণং
গিরেরিরাগ্রং রজসারকীর্ণম্ ॥ 5.7.6 ॥

নারীপ্ররেকৈরির দীপ্যমানং
তডিদ্ধিরশ্চোধরমর্চ্যমানম্।
হংসপ্ররেকৈরির রাহ্যমানং
শ্রিয়া যুতং খে সুকৃতং রিমানম্ ॥ 5.7.7 ॥

যথা নগাগ্রং বহুধাতুচিত্রং
যথা নভশ্চ গ্রহচন্দ্রচিত্রম্।
দদর্শ যুক্তীকৃতচারুমেঘ -
চিত্রং রিমানং বহুরত্নচিত্রম্ ॥ 5.7.8 ॥

মহী কৃতা পরতরাজিপূর্ণা
শৈলাঃ কৃতা বৃক্ষরিতানপূর্ণাঃ।
বৃক্ষাঃ কৃতাঃ পুষ্পরিতানপূর্ণাঃ
পুষ্পং কৃতং কেসরপত্রপূর্ণম্ ॥ 5.7.9 ॥

কৃতানি রেশ্মানি চ পাণ্ডুরাণি
তথা সুপুষ্পাণ্যপি পুষ্করাণি।
পুনশ্চ পদ্মানি সকেসরাণি
রনানি চিত্রাণি সরোররাণি ॥ 5.7.10 ॥

পুষ্পাহরয়ং নাম রিরাজমানং
রত্নপ্রভাভিশ্চ রিঘূর্ণমানম্।

রেশ্মোত্তমানামপি চোচ্চমানং
মহাকপিস্তত্র মহারিমানম্ ॥ 5.7.11 ॥

কৃতাশ্চ রৈদূর্যমযা রিহঙ্গা
রুপ্যপ্ররালৈশ্চ তথা রিহঙ্গাঃ।
চিত্রাশ্চ নানারসুভির্ভূজঙ্গা
জাত্যানুরূপাস্তুরগাঃ শুভাঙ্গাঃ ॥ 5.7.12 ॥

প্ররালজাম্বুনদপুষ্পপক্ষাঃ
সলীলমারজিতজিহ্মপক্ষাঃ।
কামস্য সাক্ষাদির ভান্তি পক্ষাঃ
কৃতা রিহঙ্গাঃ সুমুখাঃ সুপক্ষাঃ ॥ 5.7.13 ॥

নিযুজ্যমানাশ্চ গজাঃ সুহস্তাঃ
সকেসরাশ্চোৎপলপত্রহস্তাঃ।
বভূর দেবী চ কৃতাসুহস্তা
লক্ষ্মীস্থথা পদ্মিনি পদ্মহস্তা ॥ 5.7.14 ॥

ইতীর তদ্ গৃহমভিগম্য শোভনং
সরিষ্মযো নগমির চারুকন্দরম্।
পুনশ্চ তৎপরমসুগন্ধিসুন্দরং
হিমাত্যে নগমির চারুকন্দরম্ ॥ 5.7.15 ॥

ততঃ স তাং কপিরভিপত্য পূজিতাং
চরন্ পুরীং দশমুখবাহুপালিতাম্।
অদৃশ্য তাং জনকসুতাং সুপূজিতাং
সুদুঃখিতাং পতিগুণরেগনির্জিতাম্ ॥ 5.7.16 ॥

ততস্তদা বহুরিধভারিতান্ননঃ
কৃতাঅনো জনকসুতাং সুরঅন্ননঃ।

अपश्यतोऽभरदतिदुःखितं मनः

सचम्बुषः प्ररिचरतो महात्नः ॥ 5.7.17 ॥

॥ इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये सुन्दरकाण्डे सप्तमः सर्गः ॥